बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,
पटना–800014

पशुओं में गर्भपात एवं रोकथाम के विभिन्न तरीके

डा० शैलेन्द्र किशोर शीतल[1], डा० आलोक कुमार[2], डा० जय किशन प्रसाद[3]

१,२ सहायक प्राध्यापक, ३ अधिष्ठाता
बिहार पशुचिकित्सा महाविद्यालय,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना

पशुओं में गर्भधारण करने के बाद भ्रूण का निष्कासन गर्भपात कहलाता है। यह आमतौर पर भ्रूण का गर्भाशय के अंदर मरने के कारण होता है। यदि भ्रूण की मौत 1–2 महीने के गर्भकाल में हो तो उसे प्रारंभिक भ्रूण मौत कहते हैं। यह भ्रूण आम तौर पर बिना किसी गर्भपात लक्षण के ही गर्भाशय द्वारा अवषोषित हो जाता हैं और हमें पता नहीं चल पाता हैं। गर्भावस्था के 2 महीने बाद सामान्यतः भ्रूण और अपरा का निष्कासन होता है। जब भ्रूण पूर्ण अवधि का हो एवं मृत पैदा हो तो उसे प्रायः मृत प्रसव कहते हैं। यह मृत प्रसव, कठिन जन्म और भ्रूण की मौत या किसी रोग के कारण गर्भाशय में मौत के कारण हो सकता है।

कारणः

पशुओ में मुख्यतः गर्भपात के दो कारण है–असंक्रामक कारण एवं संक्रामक कारण।

अ. असंक्रामक कारणः ये कारण निम्नांकित हैंः

1. भ्रूण में असामान्यताएं भी गर्भपात का कारण हो सकता हैं। गर्भाशय में भ्रूण का विकास सही तरह से नहीं होता हैं जिससे गर्भपात होता हैं।
2. पर्यावरण गर्मी तनाव भी पशुओं के प्रजनन को प्रभावित करता है। हालांकि इसमें सामान्यतः गर्भपात नहीं होता है बल्कि गर्भधारण की समस्याएं पैदा होती है।
3. टॉक्सिन के कारण भी गर्भपात या प्रारंभिक भ्रूण मौत हो सकता है। यह टॉक्सिन पादप जनित या अन्य हो सकता है।
4. एस्टेरोजेनिक पदार्थ या चारा अधिक मात्रा में बहुत दिनों तक पशु को खिलाने से भी गर्भपात होता है।

5. प्रोजेस्टेरोन हारमोन की कमी से पशुओं में जल्दी गर्भपात हो जाता है।
6. ग्लूकोकॉर्टिकाइड्स या हाइड्रोकॉर्टिसोन देने से गर्भवती पशुओ में गर्भपात हो सकता है।
7. विटामिन ए की कमी से भी गर्भपात होता है।
8. पशुओं में आयोडीन की कमी से भी गर्भपात होता है।
9. किसी कारण से पशुओं में एलर्जी या सदमा भी गर्भपात करा सकता है।
10. यदि पशु को यौवनावस्था या प्रसव के तुरंत बाद प्रजनन कराते हैं तो अचानक गर्भपात हो सकता है।

ब. संक्रामक कारण:

क. जीवाणु जनित गर्भपात: एक्टिनोमाइसेस, बैसिलस, स्ट्रेपटोकोकस और वातावरण में पाया जाने वाला अन्य जीवाणु गर्भपात करा सकता है। इन जीवों का स्थानांतरण आमतौर पर गाय के संचार प्रणाली के मार्ग से नाल और भ्रूण को मिलता है। अपरिपक्व प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण भ्रूण जीवाणु के प्रति अति संवेदनशील होता है। जीवाणु के विकास से भ्रूण मर जाता है जिससे गर्भपात होता है। जीवाणु गर्भपात के कारण निम्नांकित है:

1. **ब्रूसेल्ला एबोरटस:** इससे पशु में बैंग्स रोग या ब्रूसेलोसिस होता है, जिसमें पशुओं में गर्भकाल के अंतिम अवस्था में गर्भपात होता है।

2. **लेप्टोस्पाइरा प्रजाति:** इससे सामान्यत: गर्भ की अंतिम तिमाही में गर्भपात होता है।

3. **लिस्टेरिया मोनोसाइटोजेन्स (चक्कर रोग):** इससे गायों में गर्भपात सर्म्पक के लगभग एक सप्ताह के बाद होता है, और गर्भावस्था के अंतिम तिमाही के दौरान सबसे अधिक होता हैं।

4. **यूरियाप्लाज्मा और माइकोप्लाज्मा:** यह आम तौर पर गर्भपात का असामान्य कारण माना जाता है। ये स्वास्थ्य गायों के जननांग में पाया जाता है।

स. विषाणु जनित गर्भपात

1. गोजातीय विषाणुजनित डायरिया (बीवि.डी.):यह विषाणु गाय में रुधिरवाहिका के माध्यम से अपरा के द्वारा भ्रूण तक पहुँचती है। इससे गर्भपात और ममिफिकेशन होता है।

2. संक्रामक गोजातीय राइणोटाइकीआइटिस विषाणु (आई.बी.आर): यह पशुओं में गर्भपात कराता है। गर्भपात 4 महीने से गर्भावस्था से अंतिम काल तक होते हैं।

द. कवक जनित गर्भपात

कवक भी गर्भावस्था के अंतिम 2 महीनों में डेयरी पशुओं में गर्भपात करा सकता है।ये आमतौर पर

सर्दियों और बसंत महीनों के दौरान होते हैं।

(चित्र १ तीन माह का गर्भपात हुआ गाय का मृत बछड़ा

य. गोजातीय यौन रोग

ट्राइकोमोनास फोएटस और कैम्पिलोबैक्टर फोएटस प्रजाति, पशुओं में सबसे अधिक यौन रोग के साथ जुड़े दो जीव हैं। इस संक्रमण से पहली तिमाही में गर्भपात होता है।

लक्षणः

गर्भपात एक रोग का लक्षण है। सामान्यतः बीमारी के कारण गर्भाशय के अंदर का अविकसित बछड़ा बहुत दिनों तक जिन्दा नही रह पाता है, और उसका गर्भपात हो जाता है। गर्भपात होने से पहले पशु के थन और बाहरी जननांग सूज जाता है। कभी–कभी बछड़ो का निष्कासन बिना किसी लक्षणों की चेतावनी के ही हो जाता है। पशुओं में गर्भपात के बाद उसके जननांगों से गन्दा, भूरा या पीला परतदार पदार्थ बाहर निकलती है। यदि इसका सही समय पर उपचार नही किया जाये तो पीव हो जाता है। पशुओ में जेर का रूकना और बांझपन भी गर्भपात रोग के लक्षणों में से एक है।

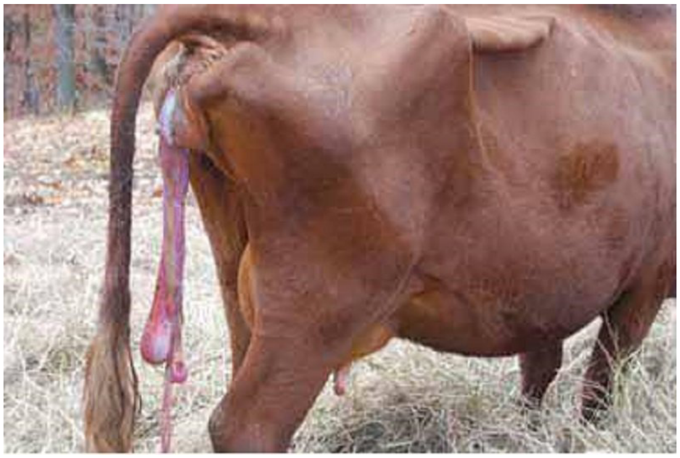

(चित्र २ गर्भपात के बाद गाय में जेर का रुकना

नियंत्रण और रोकथाम के तरीकेः

1. गैर संक्रामक गर्भपात के सामान्य रोकथाम के लिए अच्छा पशुपालन एवं उसका उचित प्रबंधन किया जाना चाहिए।
2. संक्रामक गर्भपात के नियंत्रण और रोकथाम के लिए पशुओं का झुण्ड नीति, स्क्रीनिंग सही समय पर होना चाहिए।
3. प्रत्येक संक्रामक गर्भपात कारकों के लिए उचित नियंत्रण उपाय करना चाहिए।
4. गाभिन पशुओं को हमेशा साफ सुथरे स्थान में रखें और कीटाणु नाशक घोल से उसकी सफाई करना चाहिए।
5. बीमार पशुओं को गाभिन पशुओं से अलग रखना चाहिए।

6. गर्भपात के कारण संक्रामक रोगों के खिलाफ उचित टीकाकरण समय–समय पर करना चाहिए।
7. प्रजनन एवं उपचार के अभिलेखों का रखरखाव सही तरीके से करना चाहिए ताकि पहले से गर्भवती पशुओं का गर्भाधान न हो।
8. साथ ही ऐसे दवाओं का प्रयोग नहीं करना चाहिए जो पशुओ के गर्भपात का कारण बनें।
9. पशु चारा भण्डारण में समुचित स्वच्छ बायोसेकुरिटी होनी चाहिए।
10. पशु के चारे का मायकोटॉक्सिन एवं अन्य पौधे जनित टॉक्सिन के लिए व्यवस्थित मूल्यांकन समय–समय पर होना चाहिए।
11. पशु झुण्ड से एसट्रोजेनिक चारा को अलग करना चाहिए।
12. विटामिन ए एवं आयोडीन भी पशु चारा के साथ देना चाहिए।
13. यदि पशु का गर्भपात हो गया हो तो अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। साथ ही गर्भपात उत्तकों को अच्छी तरह से अलग कर नष्ट कर देना चाहिए।
14. गर्भपात के निदान के लिए पशुपालकों को तुरंत नजदीक के किसी पशु चिकित्सक से सलाह लेना चाहिए।

अतः गर्भपात का नियंत्रण तीन मुख्य सिद्धांतों पर निर्भर करता है–

1. संक्रमण के प्रसार पर रोक;
2. झुण्ड के प्रतिरक्षा का विकास
3. प्रभावित पशुओ का इलाज।

इन तीनों मुख्य सिद्धांतों का पालन सही समय पर करने से पशुपालकों को पशओं के गर्भपात से होने वाले नुकसान को बहुत हद तक कम किया जा सकता है।